श्रीः ।

गर्गमुनिप्रणीता

गर्गमनोरमा ।

मैथिलझोपाह्वश्रीबच्चूझाशर्मविरचित

भाषाटीकाविभूषिता ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

कल्याण-बम्बई.

प्रस्तावना ।

बहुतसे मनुष्य आजकल ईषद्विद्यों (पंचाङ्ग बगलमें लेकर घूमनेवालों) से प्रश्नादिक पूछकर फल नहीं घटित होनेसे ज्योतिःशास्त्रपर आक्षेप किया करते हैं परन्तु यह नहीं समझते कि, व्याकरण, ज्योतिष आदि वेदके छः अङ्ग हैं इनमें कहा हुआ विषय मिथ्या नहीं होगा। जैसे अल्प व्याकरण (शब्दरूपावली, धातुरूपावली आदि ग्रन्थ) पढकर संस्कृत बोलनेके समय हजारों अशुद्धियां मुखसे निकाला करते हैं इससे व्याकरण शास्त्र अशुद्ध नहीं कहा जा सकता क्योंकि पूर्ण व्याकरणको जाननेवाले कथमपि अशुद्ध शब्दका प्रयोग नहीं कर सकते, इसी रीतिसे इस समय भी त्रिस्कन्ध ज्योतिषको पढकर जो फलादेश कहते हैं उनका फलादेश अवश्य ही घटित होता है और फलादेश घटित होनेसे मनुष्य कहने लगतेहैं कि, इनके फलादेश बहुत मिलते हैं। अब इसमें विचार करना चाहिये कि, ज्योतिश्शास्त्रका फलादेश ठीक नहीं है या फलादेश कहनेवाले पढे नहीं हैं? इस सिद्ध विषयको सिद्ध प्रतिपादन करना पिष्टपेषणमात्र है किन्तु मुख्य कहना यह है कि, फलादेश घटित न होना ही ज्योतिश्शास्त्रको नहीं जाननेका परिचय देताहै। देखिये ! इस श्रीमान् गर्गमुनिप्रणीत गर्गमनोरमा नामक ग्रन्थके रहते भी इसको जाननेवालोंकी संख्या बहुतही कम है। इसका कारण यह है कि, आजकल ज्योतिश्शास्त्रका पठन पाठन बहुत कम होरहा है केवल पुराण बांचनेमें व्युत्पत्ति होजाय इसीलिये दो चार सर्ग काव्य और

वांचनेमें व्युत्पत्ति हो जाय इसीलिये दो चार सर्ग काव्य और थोडा व्याकरणका पठन पाठन चल रहा है फिर गणित सिद्धान्तादिकोंसे क्लिष्ट ज्योतिश्शास्त्र, बगलमें पंचांग ले लेनेसे किस तरह आ सकता है ? देखिये ! इस छोटेसे गर्गमनोरमा नामक ग्रन्थको जानकर केवल प्रश्नसे भूत, भविष्य और वर्तमान इन तीनों कालसम्बन्धी तथा मानसिक, मौष्टिक आदि प्रश्नको जानना और चोर आदिकोंका नाम निकालना, द्रव्योत्पाटन करना, गर्भस्थ पुत्र कन्या आदि जानना इत्यादिक सभी काम कर सकते हैं; परञ्च आजतक इस ग्रन्थकी केवल संस्कृत टीका रहनेसे संस्कृतमें निपुण पूर्ण ज्योतिषको जानने वाले ही जान सकते थे और संस्कृतानभिज्ञ अल्प ज्योतिषको जानने वाले इस परम उत्तम लाभको नहीं उठा सकते थे इसलिये मिथिलादेशान्तर्गतकनिगामग्रामनिवासी ज्योतिर्वित् श्रीबच्चूझाद्वारा भाषाटीका निर्माण कराय सकलसाधारणोंके बोधके लिये मैं अपने 'श्रीवेंकटेश्वर' स्टीम् प्रेसमें मुद्रित कर प्रकाशित करता हूं और आशा रखता हूं कि ज्योतिर्विद् महाशय इसे ग्रहण कर अल्प प्रयाससे महान लाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रमको सफल करैंगे ।

आपका कृपाकांक्षी—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष—"**श्रीवेङ्कटेश्वर**" स्टीम्-प्रेस, **बम्बई.**

॥ श्रीः ॥

अथ गर्गमनोरमा ।

भाषाटीकासमेता ।

प्रणम्यानन्दरूपं तमानन्दैकनिकेतनम् ।
गर्गो बुद्धिमतां प्रीत्यै प्रश्नविद्यामथाकरोत् ॥१॥

बच्चूसमाख्यो मिथिलानिवासी गुरोः पदाब्जं हृदये निधाय ।
नृभाषया गर्गमनोरमायाष्टीकां शिशोर्बोधकरीं करोमि ॥

अर्थ-गर्गाचार्य, आनन्दका एक गृहरूप जो परमात्मा उनको प्रणाम करके बुद्धिमानोंकी प्रीतिके लिये प्रश्नविद्याको करते भये ॥ १ ॥

वर्गवर्णप्रमाणं च सस्वरं ताडितं मिथः ।
पिण्डसंज्ञा भवेत्तस्य यथाभागैस्तु कल्पना ॥ १॥

वर्गप्रमाण और वर्णप्रमाणका योग तथा स्वरसहित वर्ग वर्ण प्रमाणका योग इन दोनोंको परस्पर गुणकर योग करके जो अंक हो वह पिण्डसंज्ञक होता है । इसमें यथायोग्य भाग लेकर फलकी कल्पना करनी ॥

विशेषार्थ-प्रश्नकर्ता पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर प्रातःकालमें पुष्प, मध्याह्नमें फल, सायंकालमें नदी, रात्रिमें देवताका नाम उच्चारण करै। पीछे प्रश्न कर्तासे कहाहुआ जो नाम है उसको गणितके जाननेवाले ज्योतिषी लिख लें और उस नाममें जितने अक्षर हैं उन सभीके वर्गांक तथा वर्णांकोंको जोडकर अलग रक्खें फिर इसी नामवर्णमें जो स्वर हैं उनका भी अंक जोडकर मिला दें, अब इन दोनोंको परस्पर गुणा करके जोड लें तो वह पिण्ड होगा। इस पिण्डमें जहांपर जैसा प्रश्नका विषय हो वैसा आगे कहे अनुसार भाग लेकर प्रश्नोत्तर करैं॥

उदाहरण-प्रश्नकर्त्ताका कहाहुआ फल 'दाडिम' है इसमें तीन वर्ण हैं (द ड म) इनका अवर्गादिके (अनुसार वर्गांक) ५-४-६ हुए, यहां दकार तवर्गका तृतीय वर्ण है इसी चालसे वर्णांक ३-३-५ हुए, अब वर्गांक और वर्णांक इन दोनोंको क्रमसे जोडा तो ८-७-११ हुए इन सबको जोडनेसे २६ हुआ। इसमें स्वर आ, इ, अ २-३-१ का योग ६ मिलाया तो ३२ हुए, अब वर्गवर्णांकयोग २६ और स्वर सहित ३२ इन दोनोंको परस्पर गुणनेसे दोनों गुणनफल ८३२ / ८३२ दोनोंका योग करनेसे यह १६६४ पिण्ड हुआ। इसी पिण्डमें भाग देकर आगे फल कहा जायगा॥

ग्रन्थान्तरीय वर्णांक चक्र ।

अ २	आ ३	इ ४	ई ५	उ ६	ऊ ७	
ऋ ८	ॠ ९	ऌ १०	ॡ ११	ए १२	ऐ १३	
ओ १४	औ १५	अं १६	अः १७	०	०	अवर्ग १
क ३	ख ४	ग ५	घ ६	ङ ७	०	कवर्ग २
च ४	छ ५	ज ६	झ ७	ञ ८	०	चवर्ग ३
ट ५	ठ ६	ड ७	ढ ८	ण ९	०	टवर्ग ४
त ६	थ ७	द ८	ध ९	न १०	०	तवर्ग ५
प ७	फ ८	ब ९	भ १०	म ११	०	पवर्ग ६
य ८	र ९	ल १०	व ११	०	०	यवर्ग ७
श ९	ष १०	स ११	ह १२	०	०	शवर्ग ८

इस चक्रके अनुसार उदाहरण लिखते हैं—यहां पूर्ववत् वर्गांक ५—४—६ और वर्णांक ८—७—११ हुए, इन दोनोंका योग क्रमसे १३—११—१७ हुए, इन सबका योग ४१ हुआ, इसमें स्वरांक

३–४–२ का योग ९ हुआ, इसको पूर्व योगांकमें मिलानेसे ५० हुए, इसको और पूर्व योगांक ४१ को परस्पर गुणनेसे $\frac{२०५०}{२०५०}$ हुए, इनका योग करनेसे पिण्ड ४१०० हुआ इन दोनों पिण्डोंमें पूर्वानीत पिण्ड ही बहुसम्मत है ॥ १ ॥

सिद्ध्यसिद्धी क्रमाद्द्वाभ्यां लाभालाभौ तथाक्रमात्।
दिग्ज्ञानमष्टभिर्भक्तैः शेषतः परिकल्पयेत् ॥ २ ॥

कार्यसिद्धि होगी या नहीं ? लाभ होगा या नहीं ? इसके लिये पूर्व लायेहुए पिण्डमें दोका भाग देकर यदि एक शेष बचै तो सिद्धि और लाभ कहना । शून्य शेष बचै तो कार्यकी असिद्धि और हानि जाननी । इसी चालसे हार जीत, जीवन मरण इत्यादिमें भी जानना और दिशाज्ञानके लिये अर्थात् मेरी अमुक वस्तु कौन दिशामें है ? या चोर किस दिशामें गया है ? इसके लिये पिण्डांकमें आठसे भाग लेनेसे एकादि शेष बचैं तो पूर्वादि दिशा जाननी अर्थात् एक शेषमें पूर्व, दोमें आग्नेय, तीनमें दक्षिण इत्यादि ॥

उ०–पिण्ड १६६४ में दोका भाग दिया तो शून्य बचा, इसलिये कार्यकी असिद्धि जाननी, एवं लाभालाभादिकमें भी जानना । दिशाज्ञानार्थ आठसे भाग दिया तो शून्य शेष बचा इसलिये ईशान दिशा आयी ॥ २ ॥

गर्भे त्रिभिः क्रमाज्ज्ञेयं नरनारीनपुंसकम् ।
लोकज्ञानेऽपि वै तद्वत्कालज्ञानेऽपि वै तथा ॥३॥

गर्भप्रश्नमें पिण्डमें तीनका भाग दे, एक शेष बचै तो पुत्र, दो बचैं तो कन्या और तीन बचैं तो नपुंसक जानना। इसी चालसे लोकज्ञानके लिये और कालज्ञानके लिये भी जानना अर्थात् यह प्रश्न स्वर्गसम्बन्धी है या मर्त्यलोकसम्बन्धी है या पातालसम्बन्धी है? इसको जाननेके लिये पिण्डमें तीनका भाग देना, एक शेष बचै तो स्वर्ग, दो बचैं तो मर्त्यलोक, तीन बचैं तो पाताललोक जानना और यह प्रश्न भूतकालसम्बन्धी है या वर्तमानकालसम्बन्धी है या भविष्यकालसम्बन्धी है? इसके लिये भी पिण्डमें तीनका भाग देना। यदि एक बचै तो भूत, दो बचैं तो वर्त्तमान, तीन बचैं तो भविष्यकालसम्बन्धी जानना ॥

उ०—पूर्वानीत पिण्ड १६६४ में तीनका भाग दिया तो दो शेष बचे, इसलिये गर्भमें कन्या कहनी। इसी चालसे लोकज्ञान और कालज्ञान भी कर लेना, अर्थात् दो शेष बचे हैं इसलिये मर्त्यलोक और वर्तमान काल जानना ॥ ३ ॥

धातुर्मूलं तथा जीवो मूलं जीवश्च धातुकः ।
कालक्रमाद्गुणात्पिण्डाद्विज्ञेयं प्रश्नकोविदैः ॥ ४ ॥

धातु, मूल और जीवके ज्ञानार्थ दिनमान और रात्रिमानके तीन ३ भाग करलें, यदि दिन या रात्रिके प्रथम भागमें प्रश्न करै तो पिण्डमें तीनका भाग दे, यदि एक शेष बचै तो धातु, दो बचैं तो मूल, तीन बचैं तो जीव जानै। और दिन या रात्रिके द्वितीय भागमें प्रश्न करै तो तीनका भाग दे, यदि एक बचै तो मूल, दोमें जीव, तीनमें धातु जानै। एवं दिन या रात्रिके तृतीय भागमें प्रश्न करै तो एक शेषमें जीव, दोमें धातु, तीनमें मूल, इसप्रकार प्रश्नको जाननेवाले विद्वान् जानै ॥

उ०—किसीने दिन या रात्रिके प्रथम भागमें प्रश्न कियाहै तो पिण्ड १६६४ में तीनका भाग देनेसे दो शेष बचे इसलिये प्रश्न मूल सम्बन्धी जानना। यदि धातुचिन्ता आवै तो धाम्याधाम्यका भी निर्णय करलेना—अग्निमें शोधने योग्य स्वर्णादिधातुको धाम्य कहते हैं और अन्य हीरा आदिको अधाम्य कहते हैं, इसको जाननेके लिये पिण्डमें दोका भाग देना एक बचै तो धाम्य, शून्य बचै तो अधाम्य जानना ॥ ४ ॥

धातोर्भेदान्प्रवक्ष्येऽत्र पिण्डस्य दशशेषतः ।
स्वर्णं रौप्यं तथा ताम्रं नाणकं कांस्यपित्तले ॥५॥
सीसं जसद्लोहं च तालाभ्रकमथापि वा ।
तत्र द्वादशशेषेण कालाङ्कक्रमतो भवेत् ॥ ६ ॥
भूषणं व्यक्तिसंज्ञानं त्रिभिरेवात्र भाजिते ।
नाणकं च तथा पात्रं विज्ञेयं सर्वदा बुधैः ॥ ७ ॥

अब धाम्य धातुओंका भेद कहते हैं-पिण्डमें दशका भाग देनेसे एक शेष बचै तो सोना, दो बचैं तो रूपा, तीनमें तांबा, चारमें नाणक अर्थात् ताम्रभेद, पांचमें कांसा, छःमें पित्तल, सातमें सीसा, आठमें जस्ता, नौमें लोहा, दशमें रांग जानना। अब यहां बारहका भाग देकर कालके भेदसे भूषण नाणक और पात्र जानना अर्थात धातुके ज्ञान होजानेके पीछे भूषण है, या नाणक है, या पात्र है ? इसके लिये पिंडमें बारहका भाग दे, यदि दिन या रात्रिके प्रथम भागमें एकसे चार पर्यंत कोई अंक शेष बचैं तो 'भूषण है'

---

१ नाणक-मुद्राचिह्नविशिष्टको कहते हैं, जैसे पैसा, रुपया, मोहर इत्यादि ।

४	८	१२	
भू.	ना	पात्र	दि. रा. पू. भा.
ना	पात्र	भूष	दि. रा. म. भा.
पात्र	भू.	नाण	दि. रा. प. भा.

ऐसा कहना, पांचसे आठतक शेष बचैं तो नाणक कहना, नौसे बारह तक शेष बचैं तो पात्र कहना, इसी चालसे दिन या रात्रिके द्वितीय भागमें एकसे चारतक नाणक, पांचसे आठतक पात्र, नौसे बारह तक शेष बचनेसे भूषण । और दिन या रात्रिके तृतीय भागमें एकसे चार पर्यंत शेष बचैं तो पात्र, पांचसे आठपर्यंत बचैं तो भूषण, नौसे बारहपर्यंत शेष बचैं तो नाणक है ऐसा विद्वानोंको जानना चाहिये। यहां विशेष यह है कि-पिंडद्वारा भूषण आवै तो पिंडमें छःका भाग देकर एकादि शेषसे मस्तक, कर्ण, हस्त, ग्रीवा, कटि पादका भूषण क्रमसे जानना। यदि पात्र आवै तो पात्रोंके तीन भेद होते हैं-देवसम्बन्धी, पितृसम्बन्धी और गृह-सम्बन्धी। इसलिये पिण्डमें तीनका भाग देनेसे एक शेष बचै तो देवसम्बन्धी, दोमें पितृसम्बन्धी, तीनमें गृहकार्यसम्बन्धी जानना। इसी प्रकारसे नाणक आनेसे भी तीनका भाग देना, एक शेषसे मोहर, दोसे रुपया, तीनसे पैसा जानना ॥

उ०—यहां पिण्ड १६६४ में दशका भाग दिया तो चार शेष बचे इसीलिये नाणक धातु आया अर्थात् ताम्रभेदकी कोई चीज है ऐसा जाना गया। अब यह कोई भूषण है या पात्र है अथवा पैसा आदि है ? इसके लिये उदाहरण—दिनके प्रथम त्रिभागमें प्रश्न किया है तो पिण्ड १६६४ में बारहका भाग देनेसे आठ शेष बचे इसलिये नाणक अर्थात् पैसा आदि है ऐसा कहना। यहां नाणकके भी तीन भेद होते हैं इसलिये पिण्ड १६६४ में तीनका भाग दिया तो दो शेष बचें इसलिये रुपया कहना ॥ ५–७ ॥

अधाम्ये दशभिः पिण्डे भागो देयो विपश्चिता।
मृत्तिकाञ्जनपाषाणं हरितालं मनःशिला ॥
मरकतं पद्मरागश्च प्रवालं ताररत्नकम् ॥ ८ ॥

अधाम्य धातुओंका भेद कहते हैं—यदि पूर्व प्रकारसे अधाम्य आवै तो पिण्डमें दशका भाग दे, एक शेष बचै तो मृत्तिका, दो बचै तो अञ्जन, तीन बचैं तो प्रस्तर, चार बचैं तो हरिताल, पांच बचैं तो मनशिल, छः बचैं तो मरकत, सात बचैं तो पद्मराग, आठ बचैं तो मूँगा नौ बचैं तो मोती, दश बचैं तो रत्न जानना ॥

उ०—पिंड १६६४ में दशका भाग देनेसे चार शेष रहे इसलिये हरिताल आया ॥ ८ ॥

द्विपदस्तुर्य्यपादश्च विपदः पादसंकुलाः ।
चतुर्भिर्भाजिते शेषे विज्ञेयाः सर्वदा बुधैः ॥ ९ ॥

पूर्व प्रकारसे जीवप्रश्न आवै तो पिण्डमें चारका भाग दें, एक शेष बचै तो द्विपद अर्थात मनुष्य देवतादि, दो शेष बचें तो चतुष्पद अर्थात् गौ आदि पशु, तीन शेष बचैं तो अपद अर्थात् सर्पादि और चार शेष बचें तो बहुपद अर्थात भौंरा, बिच्छू आदि पण्डितोंको जानना चाहिये ॥ यहां चूडामणिकारका मत यह है कि--पिण्डमें पांचका भाग देना, एक बचै तो द्विपद, दो रहें तो चतुष्पद, तीनसे अपद, चारसे बहुपद, पांच बचैं तो एकपद अर्थात गन्धर्व राक्षसादि जानना ॥

उ०-यहां पिण्ड १६६४ में चारका भाग दिया तो चारशेष बचे इस लिये बहुत पांववाला जीव है ऐसा कहना ॥ ९ ॥

देवता मनुजाश्चैव पक्षिणो राक्षसास्तथा ।
चतुर्भिरेव ज्ञातव्या भाजिते शेषतः क्रमात् ॥१०॥

पूर्व श्लोकके अनुसार द्विपद जीव आवै और पिंडमें चारका भाग देनेसे एक बचै तो देवता, दो बचें तो मनुष्य, तीन बचें तो पक्षी, चार बचैं तो राक्षस यह क्रमसे जानना । यहां देवता आवै तो देवताओंके

चार भेद होते हैं इसलिये पूर्व लब्धसे युक्त पिंडमें चारका भाग दे, एक शेषसे कायस्थ (ब्रह्मादि), दोसे भुवनस्थ (इन्द्र कुबेरादि) तीनसे ज्योतिष् (सूर्यादि), चार० से पितर जानना। यदि मनुष्य आवै तो मनुष्यके भी चार भेद होते हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इसलिये पिंडमें पूर्वलब्धि जोडकर चारसे भाग देना, एकादि शेषसे ब्राह्मणादि जाति जाननी। यहां कोई पांचसे भाग देनेको कहते हैं और पांच शेष बचनेसे म्लेच्छ जाति कहते हैं परञ्च सृष्ट्यादिमें चारही वर्णोंकी उत्पत्ति है इसलिये चारहीसे भाग देना ऐसा संस्कृत टीकाकारने स्वीकार किया है. यहां अपनी बुद्धिसे विवेचना कर लेना। अब ब्राह्मणमें भी चार भेद हैं इसलिये फिर पिंडमें लब्ध जोडकर चारसे भाग लेना एक शेषसे ब्रह्मचारी, दोसे गृहस्थ, तीनसे वानप्रस्थ चार शेषसे संन्यासी जानना। संन्यासीमें भी चार भेद हैं-हंस, परमहंस, बहूदक और कुटीचर इत्यादि, कल्पनाके वशसे पिंडमें लब्धाङ्क जोडते जाना और संख्यांकसे भाग देते जाना तो भिन्न २ सब ज्ञात होजायँगे। यदि पक्षी आवै तो पक्षीमें भी तीन भेद होते हैं जलपक्षी, स्थलपक्षी और आकाशपक्षी इसलिये पिंडमें पूर्व-

जोडकर तीनसे भाग देना, एकादि शेषसे जलपक्षी आदि जानना। इसी चालसे राक्षसादिमें भी भेद जानकर भागकल्पना करनी चाहिये॥

उ०--यहां द्विपदादि जाननेके लिये चारका भाग देनेसे लब्ध ४१६ हुआ है इसीको पिंड १६६४ में जोडनेसे २०८० हुआ इसमें चारका भाग दिया तो शेष शून्य रहा इसलिये राक्षस आया ॥१०॥

गौरः श्यामस्तथा रक्तो दीर्घो मध्यश्च खर्वकः ।
शिशुर्युवा तथा वृद्धस्त्रिभिर्भक्तेऽभिजायते ॥११॥

गौर, श्याम, लाल तथा दीर्घ, मध्य, छोटा और बालक, युवा वृद्ध ये सब पिंडमें तीनके भाग देनेसे होते हैं अर्थात् पिंडमें तीनका भाग देनेसे एक शेष बचै तौ गौर, दोसे श्याम, तीनसे रक्तवर्ण जानना। यहां तीनका भाग देनेसे लब्ध जो हो वह फिर पिंडमें मिला-कर तीनका भाग देनेसे एक बचै तो दीर्घ, दो बचैं

---

१ मूलमें लब्धको पिण्डमें जोडना नहीं लिखा है फिर क्यों जोडना ? इसका कारण यह है कि--जहांपर भाग लेनेका अंक तुल्य आवे वहां लब्ध जोडकरही भाग लेना चाहिये, प्रमाण "समच्छेदे तु जात्यैक्ये पूर्वोक्तक्रमतः सुधीः । लब्धांकं पिंडके क्षिप्त्वा ततो वै भागमाहरेत्" यहांपर पूर्व द्विपदादि ज्ञानार्थ चारसे भाग दिया गया है फिर देवतादि ज्ञानार्थ चारका भाग देना है इसलिये लब्ध पिण्डमें अवश्य जोड़ना चाहिये इसी चालसे सर्वत्र जानना ।

तो मध्यम, तीन बचैं तो छोटा जानना। फिर जो लब्ध हुआ है उसको फिर पिंडमें मिलाकर फिर तीनका भाग दे। एक बचै तो बालक, दो बचैं तो युवा और तीन शेष बचैं तो वृद्ध जानना ॥

उ०—पिंड १६६४ में तीनका भाग देनेसे दो बचे, इसलिये श्याम-वर्ण आया और लब्धि ५५४ को पिंडमें मिलानेसे २२१८ हुए, इनमें तीनका भाग देनेसे शेष एक बचा इसलिये दीर्घ अर्थात् ऊँचा जानना। फिर लब्धि ७३९ को पिंड १६६४ में जोडनेसे २४०३ हुआ। इसमें तीनका भाग देनेसे शेष तीन बचे इसलिये वृद्धा अवस्था आई इसी चालसे सर्वत्र जानना ॥ ११ ॥

नरस्त्रियौ च द्विविधं चत्वारश्च क्रमादिमे ।
भक्ते द्वादशभिश्चैव भावसम्बन्धचिन्तनम् ॥१२॥

पुरुष और स्त्री जाननेके लिये पिंडमें दोका भाग दे, एक बचे तो पुरुष, दो बचैं तो स्त्री जाननी । और पिंडमें बारहका भाग देकर भावसम्बन्धी चिन्ता जाने अर्थात् पिण्डमें बारहका भाग देनेसे एक बचै तो तनु-भावसम्बन्धी, दो बचैं तो धनभावसम्बन्धी, तीनसे सहजभावसम्बन्धी इत्यादि जानना ॥

उ०—पिण्ड १६६४ में दोका भाग देनेसे दो बचे इस लिये स्त्री जाननी, और भावज्ञानके लिये पिण्ड १६६४ में बारहका भाग दिया तो शेष आठ रहे, इस लिये अष्टम भाव (मृत्यु) सम्बन्धी चिन्ता जाननी ॥ १२ ॥

अन्यव्यक्तिभवो भेदो नास्माभिस्तु प्रकथ्यते ।
ग्रन्थबाहुल्यभीत्या च ज्ञेयमन्यत्रतः सदा ॥ १३ ॥

अब यहां व्यक्तिभेदसे उत्पन्न जो अन्य भेद हैं उनको ग्रन्थविस्तारके भयसे मैं नहीं कहता हूँ वह अन्य ग्रन्थोंसे सर्वदा जानना चाहिये ॥ १३ ॥

मूलभेदान्प्रवक्ष्यामि यथोक्तं शम्भुना पुरा ।
मूलं काष्ठं त्वचा पत्रं पुष्पं चैव तथा फलम् ॥१४॥
श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं चित्रं हरीतकम् ।
षड्भिर्भक्ते विजानीयात्प्रश्नविद्याविचक्षणः ॥ १५ ॥

यदि पूर्वके अनुसार मूल आवै तो उसके भेद जाननेके लिये जैसा श्रीशिवजीसे कहा गया है, वह मैं कहता हूं–पिण्डमें छःका भाग देनेसे एक शेष बचे तो मूल, दोसे काष्ठ, तीन शेषसे त्वचा, चारसे पत्र, पांचसे पुष्प और छः शेष बचैं तो फल जानै। अब वर्णज्ञानके

लिये पूर्वपिण्डमें छःका भाग देनेसे जो लब्ध हुआ है उसको पिंडमें जोडकर फिर छःका भाग दे एक बचै तो शुक्ल, दोसे रक्त, तीनसे पीत, चारसे कृष्ण, पांचसे चित्रवर्ण और छः शेष बचैं तो हरा वर्ण है ऐसा प्रश्न विद्याको जाननेवाले जानैं ॥

उ०—पिण्ड १६६४ में छःका भाग देनेसे दो शेष बचे इसलिये काष्ठ आया और लब्धि २७७ को फिर पिण्डमें जोड दिया तो १९४१ हुए, इनमें छःका भाग देनेसे तीन शेष बचे, इसलिये पीत वर्ण आया ॥ १४ ॥ १५ ॥

तरवश्च लतौषध्यस्तृणं गुल्मादिकं तथा ।
शुष्कमार्द्रं तथा द्वाभ्यां भक्ष्याभक्ष्यं तथैव च १६॥

अब पिंडमें पांचका भाग देकर एक शेष बचै तो वृक्ष, दो बचैं तो लता, तीन बचैं तो औषधी, चार बचें तो तृण (दूर्वादि) पांच शेष बचैं तो गुल्म (मालती आदि) जानना और पिण्डमें दोका भाग देनेसे एक शेष बचै तो सूखा, दो बचैं तो कच्चा जानना. अब [illegible]का भाग देनेसे जो लब्ध हो उसको पिण्डमें जोड-कर फिर दोका भाग देनेसे एक शेष बचै तो भक्ष्य, दो बचैं तो अभक्ष्य जानना, इसी चालसे सुगन्ध, दुर्गन्ध

तथा कटुकादि रस और खाद्य, चोष्य, पेय, लेह्य भी भागके कल्पनासे जानना ॥

उ०–पिण्ड १६६४ में पांचका भाग देनेसे शेष चार वचे, इसलिये तृण (घास) आया, और शुष्क आर्द्र जाननेके लिये पिण्ड १६६४ में दोका भाग दिया तो शेष दो बचनेसे आर्द्र जाना गया और लब्ध ८३२ को पूर्व पिण्डमें जोडनेसे २४९६ हुआ इसमें दोका भाग दिया तो शेष दो बचे इसलिये अभक्ष्य है ऐसा जाना गया, इसी चालसे सुगन्धयुक्त और दुर्गन्धयुक्त आदिका भी जानना ॥ १६ ॥

स्वदेशजं परोक्षं च कल्पनाभिर्विचिन्तयेत् ॥
कालसन्धौ तु संप्राप्ते प्रकीर्णं चिन्तयेद्बुधः १७॥
यथाक्रमविभागेन मूलमिश्रेण वै तथा।
इत्येवं बहुधा चिंत्यं प्रश्नकाले मनीषिभिः ॥१८॥

स्वदेशसम्बन्धी वस्तु है या अन्यदेशसम्बन्धी ? इसके लिये भी भक्ष्याभक्ष्यज्ञानार्थ दोका भाग देनेसे जो लब्ध हुआ है उसको पिण्डमें जोडकर दोका भाग देनेसे एक शेष बचै तो स्वदेशसम्बन्धी, दो बचैं तो विदेशसम्बन्धी जानना और कालकी सन्धिमें प्रश्न होनेसे प्रकीर्ण अर्थात् मिश्र जानना, जैसे पूर्वाह्णमें

प्रश्न होनेसे पिण्डमें तीनका भाग देनेसे एक शेष रहनेमें धातु कहा है, और मध्याह्नमें एक शेषसे मूल कहा गया है। इसी चालसे सन्धिमें प्रश्न होनेसे दोनों मिश्र अर्थात् धातु और मूल मिलाहुआ जैसे काष्ठका बेंट लगा हुआ चाकू आदि जानना। और जहां काल तथा पिंड दोनोंमें संशय हो तहां तीनों मिश्र जानना, इसी चालसे मिश्रका ज्ञान सर्वत्र करना और जहांपर क्रमविभाग अर्थात् अपवर्त्तनसम्भव होय तहां लब्ध पिंडमें जोडकर क्रिया करनी चाहिये, इत्यादि बहुत विचार विद्वानोंके करने योग्य हैं॥

उ०—भक्ष्याभक्ष्यज्ञानार्थ पिण्ड २४९६ में दोका भाग देनेसे लब्ध १२४८ हुआ है, इसको पिण्ड १६६४ में मिलानेसे २९१२ भया, इसमें दोका भाग देनेसे शून्य० रहा, इसलिये अन्यदेशसम्बन्धी जानना॥

अब यहां मूकप्रश्नमें संक्षिप्त चोर या वस्तुका नाम जाननेके लिये किंचित् प्रकार लिखते हैं–पिंडमें

---

१ पिंडमें संशय तबही होसकता है जब ह्रस्व दीर्घ दोनों प्रश्नमें आनेके योग्य हों यथा 'गिरिश' और 'गिरीश' यहां रेफमें ह्रस्व और दीर्घ दोनों युक्त हैं तो ह्रस्वसे पिण्ड बनाना या दीर्घसे यह संशय होता है ऐसे स्थानमें भी मिश्र आते हैं। यहां काल मिश्र और पिण्ड मिश्र दोनों मिश्र मिलाकर तीनों मिश्र धातु, मूल, जीव आजाते हैं।

सातका भाग देनेसे जो शेष बचैं उतनेहीं नामाक्षर जानना। अक्षर जाननेके लिये प्रथम पिंडमें आठका भाग देनेसे एक बचै तो अवर्ग, दोसे कवर्ग, तीनसे चवर्ग चारसे टवर्ग, पांचसे तवर्ग, छः से पवर्ग, सातसे यवर्ग और आठ शेष बचनेसे शवर्ग जानना। फिर पिंडमें पांचका भाग देनेसे एक शेष बचे तो उस वर्गका प्रथम अक्षर, दोसे द्वितीय, तीनसे तृतीय, चार शेषसे चतुर्थ, पांच शेषसे पञ्चम अक्षर जानना, इसप्रकार पहिले जितनी नाममें वर्णसंख्या आई है उतने बार करनेसे नाम आ जायगा ॥

उ०–पिण्ड १६६४ में सातका भाग देनेसे पांच शेष बचें इसलिये पांच अक्षरका नाम है ऐसे जानना। अब लब्ध २३७ को पिण्डमें जोडनेसे १९०१ हुए, इनमें आठका भाग देनेसे लब्ध २३७ हुए और शेष पांच हैं इसलिये पञ्चम तवर्ग आया। फिर लब्ध पिण्डमें जोडनेसे १९०१ हुए पांचका भाग देनेसे एक शेष बचा इसलिये तवर्गका प्रथम अर्थात् 'त' आया। इसी प्रकारसे आगेके वर्ण भी निकाल लें॥ १७ ॥ १८ ॥

केशोऽसृगस्थिमांसानि चर्म मेदस्तथा वसा।
एवं जीवे विचारः स्याज्जीवितं मृतमेव च ॥ १९ ॥

जीवप्रश्नमें विशेष जाननेके लिये पिण्डमें छःका भाग देनेसे एक शेष बचै तो केश, दो बचैं तो शोणित, तीनसे हड्डी, चारसे मांस, पांचसे चर्म, छःसे चर्बी जाननी। इसी चालसे जीवमें जीवित और मृतका भी विचार करना। यथा पिण्डमें दोका भाग देनेसे एक शेष बचै तो जीवित, दोसे मृत जानना। किस प्रकारसे और किस जगह मरण हुआ? इसके लिये पिण्डमें पांचका भाग दे, एक शेष बचै तो व्याधिसे, दो शेष बचैं तो ज्वरसे, तीन शेषसे देशान्तरमें, चारसे युद्धमें, पांचसे स्वस्थानमें मरण जानना॥

उ०—पिण्ड १६६४ में दोका भाग देनेसे दो शेष बचे इसलिये मृत जाना गया। फिर पिंडमें पांचका भाग देनेसे शेष चार बचे इसलिये युद्धमें मरण जानना॥

अब यहां लग्नवशसे कष्ट जाननेके निमित्त प्रकार लिखते हैं—पिंडमें बारहका भाग देनेसे एक शेष बचै तो मेष, दो बचैं तो वृष, तीनसे मिथुन इत्यादि लग्न जानै। यदि मेषलग्न हो तो—मन्दाग्नि, भूतपीडा वातरोग, ज्वर, क्षुधा, वर्षसम्बन्धी रोग, धर्मरहित, कमर, मस्तकपर, पेटमें पीडा और अनेक कष्ट हों। वृष आवै तो—स्वप्न, शोष, ज्वरसे पीडा और मस्तक, नेत्र कम-

रमें रोग हों । मिथुनमें-वायु विकार और ज्वर हो । कर्कमें-रोना, हँसना मौन हो जाना और कर्ण तथा मस्तकमें पीडा हो । सिंहमें-शीतज्वर, अरुचि, कण्ठ, या हृदयमें पीडा होवे । कन्यामें-मन्दाग्नि, क्रोध, आलस्य, अरुचि, ज्वर और पित्तसे रोग हो तथा मुखरोध और आंख, कान, जीभमें पीडा हो । तुलामें शूल, कफ, वायु, पित्त, उद्वेग, तापसे बाधा हो । वृश्चिक आवै तो-ज्वर, कफ, रुधिरस्राव और पेटमें रोग हो । धनु लग्नमें-शोष, ताप और छाती या मस्तकमें पीडा हो । मकरमें-ताप,वायु, देहका टूटना और पीडा हो । कुम्भमें-बधिरता हो । मीन लग्न आवै तो-हाथ और पांवमें दाह हो । यहां रोग जाननेके लिये पिंडमें चारका भाग देनेसे एक शेष बचै तो कफ, दोसे पित्त, तीनसे वायु, चारसे त्रिदोषजनित व्याधि जाननी । फिर साध्यासाध्यके लिये पिंडमें दोका भाग देनेसे एक शेष बचै तो साध्य और दो अर्थात् शून्य० बचै तो असाध्य रोग जानना । यहाँ लग्नके वशसे दोष भी जानना, जैसे-मेषमें पूर्वज, वृषमें आकाशदेवी, मिथुनमें महेशी, कर्कमें शाकिनी, सिंहमें जलप्रेत, कन्यामें ग्रह, तुलामें क्षेत्रपाल, वृश्चिकमें सर्प, धनमें शरीरोत्पन्न, मकरमें

व्चन्द्रिका, कुम्भमें प्रेत, मीनमें योगिनीसम्बन्धी जानना ॥

उ०—पिण्ड १६६४ में बारहका भाग देनेसे आठ शेष बचे इसलिये वृश्चिक लग्न आया। अब वृश्चिक राशिका पूर्व लिखा हुआ फल ज्वरादि जानना। फिर पिण्डमें चारका भाग देनेसे शून्य ० बचनेसे त्रिदोष जाना गया। और दोसे भाग देनेसे शून्य ० बचा इसलिये असाध्य जाना गया ॥ १९ ॥

पिण्डे नामसमायुक्ते यायी स्थायी यथाक्रमात्।
शून्ये संधिः समादेश्या युद्धकाले न संशयः॥२०॥

अब युद्धमें जय पराजयका ज्ञान लिखते हैं–पिंडको दो जगह रखके एक जगह यायी (जाकर युद्ध करनेवाले) के नाम और दूसरे जगह स्थायी (घरमें बैठे) के नामके वर्गवर्ण स्वरांक जोडकर दोनों जगह तीनका भाग देनेसे यायीके पिण्डमें एक शेष बचै तो यायीका जय, स्थायीके पिण्डमें एक शेष बचै तो स्थायीका जय और दोनों जगह दो शेष बचैं तो दोनोंका जय, दोनों जगह शून्य० शेष बचैं तो सन्धि (मिलाप) कहना। यायीके पिंडमें दो शेष बचैं और स्थायीके पिंडमें एक बचै तो भी युद्धकालमें मिलाप कहना।

इसी चालसे विवादमें, जूआ खेलनेमें युद्धमें, मल्ल-युद्धमें, शरान्तर परीक्षा आदिमें कहना चाहिये ॥

३०-युद्धमें राम और रावणके जय-पराजयका इसी पिंडसे उदाहरण लिखतेहैं-रामका वर्गांक ७-६ तथा वर्णांक २-५ और स्वर २-१ सबका जोड किया तो २३ हुआ, इसको पिण्ड १६६४ में जोडा तो १६८७ यायी (राम) का पिण्ड हुआ । अब रावणका वर्गांक ७-७-४ तथा वर्णांक २-४-५ और स्वरांक २-१-१ सबका योग ३३ हुआ इसको पिंडमें मिलाया तो १६९७ स्थायी (रावण) का पिण्ड भया दोनों पिण्डोंमें तीनका भाग देनेसे यायी (राम) के पिण्डमें एक शेष बचा और स्थायी (रावण) के पिण्डमें शून्य० शेष बचा इसलिये रामका जय आया । इसी प्रकारसे स्वचक्र परचक्रादि-कमें भी जानना ॥ २० ॥

ग्रहध्रुवघ्ने पिण्डे तु चन्द्रागैर्भागमाहरेत् ।
लब्धाङ्कादवधिर्ज्ञेयः प्रश्नकाले मनीषिभिः ॥२१॥

अब जो पूर्व प्रश्न कह आये हैं वह कितने रोजमें होंगे उसकी अवधि जाननेके लिये पहले किस ग्रहका ध्रुवांक जोडना उसको ग्रन्थान्तरसे लिखतेहैं--पिंडको छःसे गुणकर आठ जोड दे, उसमें सातका भाग दे, जो शेष बचै उससे ग्रह जानै अर्थात् एक शेष बचै

तो रवि, दो बचैं तो चन्द्र, तीन बचें तो मङ्गल इत्यादि,--जो ग्रह आवै उस ग्रहके ध्रुवांक (यथा र. ५ चं. २१ मं. १४ बु. ९ बृ. ८ शु. ३ श. ११) से पिण्डको गुणकर इकहत्तर ७१ का भाग देनेसे शेष जो बचै तिसमें क्रमसे रवि आदिक ग्रहका ध्रुवांक घटावै जिसका ध्रुवांक नहीं घटै वह ग्रह लब्ध जानना, इसपरसे अवधिके ज्ञान विद्वानोंको करना चाहिये, जैसे रवि और मङ्गल लब्ध आवैं तो शेष तुल्य दिनमें कार्य सम्पन्न होनेको कहना, शुक्र चन्द्र लब्ध आवैं तो शेष तुल्य पक्षके भीतर कहना, गुरुसे मास, बुधसे ऋतु, शनिसे उतने वर्ष जानने ॥

उ०--पिंड १६६४ को छःसे गुणा तो ९९८४ हुए, इनमें आठ मिलाया ९९९२ हुए, इनमें सातका भाग दिया तो शेष तीन बचा, इसलिये मङ्गलके ध्रुव १४ से पिंडको गुण दिया तो २३२९६ हुए, इसमें एकहत्तरका भाग देनेसे आठ शेष बचे, इनमें रविका ध्रुवांक घटकर चन्द्रमा लब्ध आया और शेष तीन बचे हैं इसलिये त्रिपक्षमें कार्य कहना ॥

यहां ग्रन्थान्तरके मतसे द्रव्योत्पाटन और शल्योद्धारादिक विषयोंको लिखते हैं--

सात रेखा ऊर्ध्वगत और नौ रेखा तिरछी लिख-नेसे अडतालीस कोष्ठकका चक्र बनता है ।

द्रव्यशल्योत्पाटनचक्र ।

अ ३	क ५	ख ७	ग ९	घ ११	आ १३
ङ १३	उ ११	च ९	छ ७	ऊ ५	ज ३
झ ३	ञ ५	ओ ७	औ ९	ट ११	ठ १३
ड १३	ढ ११	ण ९	त ७	थ ५	द ३
ध ३	न ५	प ७	फ ९	ब ११	भ १३
ग १३	य ११	अः ९	अ ७	र ५	ल ३
व ३	ऐ ५	श ७	ष ९	ए ११	स १३
ई १३	ह ११	ळ ९	क्ष ७	ज्ञ ५	इ ३

इसमें क्रम और उत्क्रम करके तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह और तेरह इतने अङ्क स्थापन करै, ऐसा स्थापन

करनेसे चक्रके सब अङ्क आजायँगे पीछे चारों कोणोंमें क्रमसे अकारादि स्वरोंको लिखकर फिर शेष स्थानोंमें ककारादि अक्षरोंके लिखनेसे चक्र ठीक हो जाता है पीछे प्रश्नकर्तासे कहा हुआ जो नाम है उसके आदिमें जो अक्षर है वह अक्षर जिस कोष्ठमें पडे उस कोष्ठमें जो अङ्क है उससे पिण्डको गुणाकर अडतालिसका भाग दे जो शेष बचै,-ईशानादिक्रमसे उतने संख्या कोष्ठमें द्रव्य या शल्य है ऐसा कहना अर्थात् भूमिकाभी अडतालिस भाग करके जिस भागमें पडै उस भागमें कहना ॥

उ०-यहां प्रश्न दाडिमका आदि अक्षर 'दा' है कोष्ठकमें दाकार का तीन अंक है उससे पिण्डको गुणनेसे ४९९२ हुआ इसमें अडतालीसका भाग देनेसे शून्य शेष बचा इसलिये अडतालिसवें कोष्ठमें शल्य या द्रव्य कहना ॥ २१ ॥

इत्येवमेकविंशत्या श्लोकैर्लोकमनोरमा ।
प्रश्नविद्या मया प्रोक्ता देया शिष्याय साधवे२२॥

इति श्रीगर्गाचार्यविरचिता गर्गमनोरमा
समाप्ता ।

इस प्रकारसे इक्कीस श्लोकोंसे गर्गमनोरमा नामकी प्रश्नविद्या मुझसे कहीगई है । यह प्रश्नविद्या सज्जन शिष्यको देनी चाहिये ॥ २२ ॥

इति मिथिलादेशान्तर्गतकनिंगामग्रामवास्तव्यझोपाह्व
श्रीबच्चूशर्मकृता गर्गमनोरमाभाषाटीका
समाप्ता ।

शके भूमिरामाष्टभूसम्मिते वै शुभे मासि भाद्रे वलक्षे दले च ॥
तिथौ हव्यवाहस्य वारे बुधस्य समाप्ता कृतिः संप्रसादाद्धरस्य ॥१॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान :–

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई–४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे–महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक–वाराणसी (उ. प्र.)